Dharmadutta Tripathi
Suryapuram
सूर्य्य पुराण
Hindi
Paper — Printed (Book form)
1913 San (106 years old)
20 folio
7.4" X 5.5"
Complete

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीः ॥

सूर्य्यपुराण

। जिसको ।

पंडित धर्मदत्त त्रिपाठी ने

केशव यन्त्रालय साक्षीविनायक
श्री काशी में छाप कर
प्रकाशित किया ।

दाम)॥ सन् १९१२ ई०

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीः ॥

॥ अथ सूर्य्य पुराण ॥

दो०—बन्दि कंज पद जोरिकै, श्रीपति गौरि गणेश
तुलसीदास कहते सुयश, बर्णों कथा दिनेश ॥
बन्दौ चरण हृदय धरि, प्रेम भक्ति मन लाई।
महिमा अगम अपार है, साहिब ज्ञान सहाई ॥
चौ०—सूर्य्य देवता सुमिरौ तोहीं । सुमिरत ज्ञान
बुद्धि दे मोहीं ॥ ज्योति स्वरूप भानु बलवाना ।
तेज प्रताप अग्नि समाना ॥ तुम आदित परमेश्वर
स्वामी । अलख निरंजन अंतरजामी ॥ बरणि
नजाई ज्योति कर लीला । धर्म धुरंधर परम सुशीला ॥
ज्योतिकला चहुं ओर बिराजै । जग मग कानन
कुण्डल छाजै ॥ नील बरन हय असवारी । ज्ञान
निधान धर्म ब्रत धारी ॥ तासु कथा मैं कहौं बखानी ।
पुरुषोत्तम आनन्द घन ज्ञानी ॥ आदित महिमा
अगम अपारा । तीन भुवन जेहि छबि उजियारा ॥

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दो०—आदित कथा पुनीत अति, गावहिं शंभु सुजान
तीनलोक छबि ज्योति मय, करौं प्रताप बखान॥

चौ०—सुनहु उमा आदित परतापा। बरनो बिमल सूर्य्य कर जापा॥ नाथ महामत सुनहु भवानी। कहौं पुनीत कथा शुभ बानी॥ बांझ सुनै एक मास पुरानी॥ मन क्रम बचन धरै ब्रत ध्याना॥ द्वादश बर्ष करै अतवारा। नेम धर्म एक मधुर अहारा॥ कुशा बिछाई करै बिश्रामा। हर्षित जपै सूर्य्य कर नामा॥ आदित बासर जबही आवे। सुन पुराण अरु विप्र जिमावै॥ इतना टेक धरै तिथ जबहीं। होहिं दयाल दयानिधि तबही॥ होइं पांच सुत अग्नि समाना। धर्म धुरंधर ज्ञान निधाना॥ तिनसो जीति सकै नहिं कोई। बिद्यमान सुलक्षण होई॥

दो०-बांझ कथा मन लाइके, टेक धरै ब्रत ध्यान
निश्च उपजै पांच सुत, जोधा अग्नि समान॥

इति श्रीपद्मपुराणेगोस्वामीतुलसीदासजीकृते सूर्य्य माहात्म्यबन्ध्या स्त्री पुत्र जननी नाम प्रथमोऽध्यायः॥१॥

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चौ०-कथा कहौं रचि अमृत बानी। मन अस्थिर कर सुनहु भवानी। कुष्ठ बरण हो जाके अंगा। सुने मनुज सो भानु प्रसंगा। रवि दिन भोजन करै अलोना। पुष्प सुबास चढावै दोना॥ बिप्र बोलि रवि होम करावै। सोई भस्म लै अंग लगावै॥ निश्चै कुष्ठ बरन छय जाई। धनि महिमा है सूर्य्य गोसाई॥

दो०-जाके कुष्ट शरीर में, सो नित सुनै पुरान।
निश्चै सूर्य्य प्रताप ते, पावै काया दान॥

इति श्रीमहापुराणे सूर्य महात्म्ये कुष्टनिवारणन्नामा।२।

चौ०-सूर्य्य कथा मैं कहौं बखानी। मन सुतंत्रहोइ सुनहु भवानी। जाके बरण अंग मह होई। सूरज कथा पाठ कर सोई॥ कर पांच ब्रत नर अतवारा। नेम धर्म एक मधुर अहारा॥ चन्दन अगर लेप तन करई। निसदिनध्यानसूर्य्यपरधरई॥ निश्चय अंगबरन मिटिजाई। धनि महिमा सूर्य गोसाई॥ भानु चरित्र सुन मन लाई। निश्चै कुष्ट बरन क्षय जाई॥

दो०-जाके उपजे कुष्ट जो, सो नित सुने पुराण।
धनि महिमा आदित्य के, करौं प्रतापबखान॥

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चौ०-सूर्य्यं कथा मैं कहौं बुझाई। मन क्रम बचन सुनौ चितलाई ॥ जो नर होइ अंध युग लोचन। सो यह कथा सुने दुख मोचन ॥ करै लोन बिनु एक अहारा। बिविध भांति कर नेम अचारा। पीपर तरु तर सुनै पुराना। पावै लोचन अंध सुजाना ॥ अंधा लोचन निश्चैपावै। जो यह कथा सुचित मनलावै ॥

दो०-अंध लहै निश्चै नयन, जो जानै प्रभु एक।
पुलकित परम पुनीत अति, धरै कथापर टेक॥

इतिश्रीमहापुराणेसूर्यमाहात्म्ये अंधलोचन प्राप्तनाम ॥ ३ ॥

चौ०-यात्रा जो नर करै विदेशा। सो नित सुनै पुरान सुरेशा ॥ निश्चै ताइ सकल शुभहोई। लाभ भवन चलि आवै सोई ॥ जो संतित रहि ऋण अधिकारी। सो यह कथा करे अनुसारी ॥ निश्च अऋुणी सकल मिटजाई। धनि महिमा है सूर्य गोसाई ॥

दो०--यात्रा को नर जब चले, तब यह सुन पुरान।
निश्चै मन वांछित सकल, पुरबहिं श्रीभगवान

इतिश्रीमहापुराणेसूर्यमाहात्म्ये मनवांछितदातानाम ॥ ४ ॥

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चौ०--ऐसा महिमा आदित देवा। करहि जासु सुरनर मुनि सेवा॥ मिटै गाढ निश्चै मन तासू। पुलक प्रेम मन हरख हूलासू॥ दीनानाथ निरंजन सांई। महिमा जाकर बरनि न जाई॥ सूर्य कथा मै कहौं बखानी। मन स्थिर करि सुनो भवानी॥ कर दंडवत अरु ब्रत ध्याना। सों न तुलै यहकथा समाना॥ तेज प्रताप बरनि नहि जाई। सूर्य चरित्र सुनहु मनलाई॥ कहै शंभु यह कथा पुनीता रवि प्रताप मैं भयो अजीता॥

दो०--जो महिमा आदित्य की, बरनो प्रेम उछाह।
सुनहु उमा अतिपुलकि तनकीरति प्रभुअवगाह

चौ०--कहौं पुनीत कथा शुभ बानी। बहुरि महातम सुनहु भवानो।। कातिक चैत पुनीत दिनभारी खोजहि अरघ सकल नरनारी॥ चंदन अगर कपूर कीबाती। पूजा भक्ति करबहु भांती॥ मनोकामना जो मनराखै। पुलकित होई भानु गुन भाखै॥ तेहि कल्याण करै भगवाना॥ तेजपुंज प्रभुकृपा निधाना

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दो०-लीला अगम अपार प्रभुकृपा, सिन्धु भगवान।
बरनौं कथा पुनीत यहःमन अस्थिर करि ध्यान

चौ०-सुनहुउमा यह चरित अपारा। भानु महातम बहु बिस्तारा॥ सिंहल दीप नगर एक नाऊं। तहां निवास परिक्षित राऊ॥ तहां पुनीत धर्म नरनारी। तासु भवन एक सुता कुमारी। सो नितकरे भानुकी पूजा। सेवे सूर्य और नहि दूजा॥ श्रद्धा नेम कथा मनलाई। करै हर्ष सो शुभ दिनराई॥ तासु भवन प्रभु करै कलेवा। तीन लोक नहि जानैभेवा॥ एक समय अति अचरज भयऊ। शुरसरितीर गमन तेहि ठयउ॥ चीर उतारि भूमि पर धरउ। कन्या पगजल भीतर करऊ मज्जन करन लगा सो बाला। हिए बिराजत मोतिन माला॥ तेहि आसर नारद मुनि आये। कन्या देखि परम सुखपाये॥ठाढ भये मुनि सुरसरि तीरा। लीन्ह उठाय सुताकर चीरा॥ कन्या जल में करे पुकार। पट दीजै मुनि धर्म बिचारा॥ कह नारद सुनु कन्या बाता। मोसन करहु पुरुष कर

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाता ॥ सुनु मुनि ज्ञानी भऐ तुम बौरा। ऐसेबचन कहौ जानि औरा ॥ असबानी कस लहेउ मुनिसा। हम अस कन्या लाख पचीसा। बिनती और सुनहु मन बानी। देउ बसन तुम मुनि विज्ञानी ॥

दो०--नगरनारि जलमहँ खड़ी कहमुनि सन करजोर
कृपा सिन्धु ज्ञाता धरम, अम्बर दीजै मोर ॥

चौ०-जबकन्या बहु बिनती लाई तेहिक्षण नारद रहे लजाई ॥ अम्बर दे मुनि भवन सिधाए । तह तबही श्री शंकर आए ॥ सो सुनि मुनिहि शापबस कीन्हा। सो आदित सो कहब लीन्हा ॥ जहमै करत रही असनाना। अम्बरलै गये मुनि विज्ञाना। ताही लय शिवतहांसिधारे। गौरवबदन संग गिरिजाधारे॥ शक्ति सहित प्रभुनाएमाथा । हर्षि शंभु देखिमुनि नाथा ॥ कुशल कही मुनि शिव मुसकाइ । बेठन कहि सब कथा बुझाई ॥ पूछा प्रभु नब शिव कर जोरि। नाथ सुनहु यह बिनती मोरी॥ कह अपराध कीन्ह मुनि भारी। सो अब मोसन कहहु बिचारी॥

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तब प्रभुकही सुनहु हो भारो। यह कन्या सेवक है
मोरा॥ सुनहु हिय धरिके मुनि ज्ञाना। किए कुदृष्टि
कुधर्म न जाना। कारण सोई श्राप तबदयऊ। ताते
अंम बरन मुनि भयऊ॥ इतना कहि मुनि मन
मुसकाने। ज्ञानहीन तब मुनि पहिचाने॥ बैनसुनत
प्रभु क्रोधित भयऊ। कन्या संगलै मुनि पह गयऊ

दो०-बचन सुनत क्रोधित भय, क्रोधन हिए समाय।
कौतुक कीन्ह अयुक्त तुम, मोसन कहहु बुझाय

चौ०-जोरि पानि मुनि बचन सुहाए। धरिपद
कमल सूर्य्य गुन गाए॥ कह मुनि सुनु प्रभ बचन
हमारी। भा मोसन अपराधहि भारी॥ यह अपराध
क्षमा प्रभुकीजै। दीनानाथ अनुग्रहकीजै॥ तबप्रभुकहा
सुनो मम बानी॥ उतके लोग सकल अज्ञानी। तेहि
अपराधलेहुमुनिशापा। जसकीन्हेउतस भुगु पापा॥

दो०-त्रिभुअन स्वामी मोपर, करहु ज्योति परकाश।
हर्षित गावहिं गुन बिमल, जहां मोर भववास॥

इतिश्री महापुराणे सूर्य्यमहात्म्ये षष्टमोऽध्याय॥ ६॥

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पंपापुर एक नगर को नाऊं। हलधर बिप्र तहां कर राऊं ॥ नगर बसै मानो कैलासा। धर्म कथा तहँ होई प्रकाशा ॥ पजन करै भानु दिनराती। निस दिन टेक धरे बहु भांती। कोटि अग्नि चारिहू दिशि माहीं। श्रीसूर्य्य को आश्रम ताहीं ॥ रतन जड़ित सर तहां सुहावा। कनक घाट चहुं ओर बनावा ॥ तहां खम्भ एक परम बिशाला। शत योजन सो उच्च रसाला ॥ तेहि खम्भ आदित कर बासा। प्रात खम्भसो लाग अकाशा॥ जोजन लक्षसो उदयकराहीं जोजन सहस एक पल जाहीं ॥ प्रात होत उदया चल पासा। अस्ता चल कर करहिं निवासा ॥ यहि बिधि आदित आवहिं जाहीं। समुझ पुनीत कथा मन माहीं। आदित कथा सुनहु मन लाई। मैं तोहिं अर्थ कहौं समुझाई ॥

दो०-धन्य भानु ईश्वर प्रभु, महिमा अगम अपार।
तीनलोक छबि ज्योति मय, है जाकर उजियार ॥
कुष्टी ध्यावे भक्ति कर, पावै काया दान।

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अन्तर्यामी दयानिधि, कृपा करहिं भगवान ॥
सुरनर मुनि अस्तुतिकरहिं, हितप्रसन्न भगवान।
जो हित मनब्रत नरकर, श्रद्धा प्रीति समान ॥
सबगुण आगुर बुद्धिवर, सुन्दर शाल निधान।
मनबच क्रमते हर्षयुत, जोनर करहिं बखान ॥

इति श्रीमहापुराणे सूर्य्य महात्म्ये षष्टमां अध्यायः ॥ ६ ॥

चौ०-गिरिजा कह्यो सो कहौ गोसाईं। सोमोहि अर्थ कहौ समुझाई ॥ कहन लगे शिव कथा रसाला जेहिबिधि उगहि पूर्ब कृपाला ॥ गिरिजा सुनोकथा मन लाई। मैंतोहि अर्थ कहौ समुझाई ॥ पूर्वदिशा एक श्रीपुर देशा। तहांके राजा भूप महेशा ॥ करे सदा आदित की पूजा। सेवै सूर्य्य और नहिं दूजा॥ यहिबिधि सकल नगर उजियारा। तहां एकहै अगम पहारा ॥ सहसकोस परबत परमाना। बसै तहां आदित बलवाना ॥ उभैजाय तहँ करै निवासा। पुनि पश्चिम दिशि करहिं प्रकाशा ॥ मन बचक्रम कथा बरगाई। सूर्य्य चरित बिधि तुमहिं सुनाई ॥ सुनि गिरिजा

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुन्दर यह बानी। बल प्रताप सुनि मन हरखानी। धन्य भानु जिनकी यह लीला। धम धुरंधर परम सुशीला ॥ जो नर कथा सूर्य्य की गावै। चढ़ि बिमान ॥ बैकुंठ सिधावै ॥ सूर्य्य चरित मुनि अमृत बानी। अस्तुति हर्षित करै भवानी ॥

छं०-है जय स्वामी अन्तर्यामी ज्योति कला छबि उदित महा। गुननीत निधाना श्री भगवाना करौ कृपा मोहि धर्म महा ॥ छबि ज्योति बिराजै कुंडलराजै तब प्रताप महिमा बरना। तब है घनेरा सब प्रभु तेरा लेत नाम पातक हरना ॥

दो०-करहु कृपा मोहिंपर, अति छबि जोति बिराज।
तेजाबिपुल तिहुँलोक महँ, जयजयजय महराज॥

इति श्री महापुराणे सूर्य्यमहात्म्येपूर्वदिशउदयवर्णनोनाम॥७॥

चौ०-उत्तर दिशि कह उमागि गोसांई। मैं तेहिअर्थ कहौं समुझाई। उत्तरदिशि एक नगर बिशाला। राज करे तहँ मदनगोपाला। तहां शैल एक परम बिशाला ॥ सत योजन परमान कराला ॥ तापर भानु किरन

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अन्तर्यामी दयानिधि, कृपा करहिं भगवान ॥
सुरनर मुनि अस्तुतिकरहिं, हितप्रसन्न भगवान।
जोहित मनव्रत नरकर, श्रद्धा प्रीति समान ॥
सबगुण आगुर बुद्धिवर, सुन्दर शील निधान।
मनबच क्रमते हर्षयुत, जोनर करहिं बखान ॥

इति श्रीमहापुराणे सूर्य्य महात्म्ये षष्टमो अध्यायः ॥ ६ ॥

चौ०-गिरिजा कह्यो सो कहौ गोसाईं। सोमोहि अर्थ कहौ समुझाई ॥ कहन लगे शिव कथा रसाला जेहिबिधि उगहि पूर्ब कृपाला ॥ गिरिजा सुनोकथा मन लाई। मैंतोहि अर्थ कहौ समुझाई ॥ पूर्वदिशा एक श्रीपुर देशा। तहांके राजा भूप महेशा ॥ करे सदा आदित की पूजा। सेवै सूर्य्य और नहिं दूजा॥ यहिबिधि सकल नगर उजियारा। तहां एकहै अगम पहारा ॥ सहसकोस परबत परमाना। बसै तहां आदित बलवाना ॥ उभैजाय तहँ करै निवासा। पुनि पश्चिम दिशि करहिं प्रकाशा ॥ मन बचक्रम कथा बरगाई। सूर्य्य चरित बिधि तुमहिं सुनाई ॥ सुनि गिरिजा

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुन्दर यह बानी। बल प्रताप सुनि मन हरखानी।
धन्य भानु जिनकी यह लीला। धम धुरंधर परम
सुशीला ॥ जो नर कथा सूर्य्य की गावै। चढ़ि
बिमान ॥ बैकुंठ सिधावै ॥ सूर्य्य चरित सुनि अमृत
बानी। अस्तुति हर्षित करै भवानी ॥

छं०-हे जय स्वामी अन्तर्यामी ज्योति कला
छबि उदित महा। गुननीत निधाना श्री भगवाना
करौ कृपा मोहि धर्म महा ॥ छबि ज्योति बिराजै
कुंडलराजै तब प्रताप महिमा बरना। तब हे
घनेरा सब प्रभु तेरा लेत नाम पातक हरना ॥

दो०-करहु कृपा मोहिंपर, अति छबि जोति बिराज।
तेजबिपुल तिहुँलोक महँ, जयजयजय महराज॥

इति श्री महापुराणे सूर्य्यमहात्म्येपूर्वदिशउदयवर्णनोनाम॥७॥

चौ०-उत्तर दिशि कह उमागि गोसांई। मैं तेहिअर्थ
कहौं समुझाई। उत्तरदिशि एक नगर बिशाला। राज
करै तहँ मदनगोपाला। तहां शैल एक परम बिशाला ॥
सत योजन परमान कराला ॥ तापर भानु किरन

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहि पावै । यहि बिधिपुर अंधियार जनावै ॥ शानि जोर सब पुर अंधियारा । उगे न रवि न होई उजियारा ॥ तहां बास कलियुगकर होई । पाप मछेल वसत तहँ सोई । यह कारन तहँ उगेन भानू । मैंतोहि अर्थ कहों परमानू ॥ एक समय अति अचरज भयऊ। नारद मुनि तहवां चलि गयऊ ॥ देखा नगर सकल अंधियारा । धर्म कथा कर कहूं न चारा ॥ फिरिसकल नगर मुनि देखा । अघ व्यवहार अवर नहि देखा । मन महँ नारद कीन्ह बिचारा ॥ कह आये यह पुर अंधियारा । असकहि नारद कोपेउ जबही । दीन्हा श्राप नगर कहँ तबही ॥ कुष्टी होउ सकल नरनारी । धर्म कथा कर नामबिसारी ॥ कुष्ट बरन भा सबके अंगा । आठो गात कुष्ट तन भंगा ॥ रहान कोउ कुष्ट बिहीना । जबही श्राप मुनिश्वर दीना ॥ ब्याकुल भए सकल नरनारी । त्राहि २ सब करहि पुकारी ॥ श्राप देह उत्तर कह आए । अबहम यह सुनिचरित सुनाए ॥ अब कहहु मुनि पूंछा ताही । उग्र श्राप

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कबहोई वोही॥ कहहु बुझाई कृपानिधिमोही। अंग बरन मुनि देखाकैसा। हँससमान स्वेतभा जैसा॥ बिदा होई मुनि घर कहँ आये। हरखित होई भानु गुन गाये॥ धंनि आदित कायाके राजा। ज्योतिष जासु तिहूलोक बिराजा॥ अस्तुति रविकर नारदगाये। कोटि विप्र तब नेवत पठाये॥ भोजन सुधा समान बनाये। प्रेम सहित सब बिप्र जेवाये। अश्वमेध मुनि करनसो लागे। तीनलोक के दारिद भागे॥ सब कह नारद नेवत पठाये। निज निज बाहन चढ़ि चढ़ि आये। ब्रह्मा विष्णु अवर त्रिपुरारी। आये सबै सहित सुत नारी॥ बहु प्रकार मुनि सबहि जेवाये। हरखित होइ भानु गुनगाये॥ बेदपढ़ै मुनि गिर धारि। हरखित गावहिं मंगल नारि॥ चंदन अक्षत ले पकवाना। पूजा करहिं मुनीधरि ध्याना॥ ब्रह्मादिकनिज लोकसिधाये। प्रेमपुलक सूरज गुनगाये

दो०-यज्ञकीन्ह मुनी वरस बिधि सोभा बरनि न जाय।
देव कोटि तेतीस तहँ हरखि भानु गुन गाय॥

इति श्रीमहापुराणे नारदयशवर्णनो नाम अष्टमोध्याय: ८

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चौ०-जोनर धरे सूर्य्यपर ध्याना। ताकरहोइपुत्र कल्याना ॥ जो रवि कथा सुनै मन लाइ। तापर दिनकर होइ सहाई ॥ धर्म प्रताप आदित बलवाना। तेज प्रतापी अग्नि समाना ॥ गिरजाशंभु सुनशैल कुमारी। कहा भानु चरित बिस्तारी ॥ कहन लगे शिव कथा रसाला। जेहि बिधि दक्षिण उगहि कृपाला। बरनन करहिं अर्थ समुझाई। सुनहु सत्य गिरजा मनलाई ॥ दक्षिणदिशि एकनगर अनूपा। जय मल विप्र तहांकर भूपा ॥ हर्षित भजन करे दिन राती। तहां करै प्रभु सुख बहु भांती ॥ यहि बिधि प्रभुकी ज्योति बिराजै। अनहदनादघंट धुनि बाजै ॥ तैंतिसकोटि देवता जहवां। श्रीसूर्य्यके आश्रम तहवां ॥ दक्षिणदिशि काशी प्रयागा। तहांके लोग सकल बड़भागी ॥ दोउबलभद्र सहोदर संगा। तहां बसै सरितावर गंगा ॥ कृपासिंधु प्रभुपरम अगाधा। निशि दिन सुमिरत नाथ अबाधा ॥

दो०-दक्षिण दिशा पुनीत है, सुनहु उमा मनलाई।

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रथम अर्थ जैसे अहै, तैसे कहो बुझाइ ॥

चौ०-कलि बितीति जवहि होजैहै ॥ मानुषको मानुष धरि खैहै ॥ तब प्रभु धरि अवतार कलंकी। मनुष तन हो जैहै पंखी ॥ तब दक्षिण दिशि उदै कराही । आगिल अर्थ कहौ तुमपाही ॥ धर्मकथा होइ है दिनराती । नेम धरम करि है बहु भांती ॥ विप्र जेमाय के होम करावै । वोही भस्म लै अंग लगावै ॥ बिप्र जमाय आप तब खैहै । निसि दिन कथा सूर्य्यकी गैहै ॥ यह प्रतिकमला करहिनिवासा। धर्म कथाकर होई प्रकासा ॥ मिथ्या बचन कोउना भाषै । धर्म बिचार भानु तप राखै ॥

दो०-द्वादसकला उगिहै तबहि, आदिअंत तबआइ। पूर्व जन्मके सकल अघ, कहत सुनत अक्षयजाइ ॥

इति श्रीमहापुराणे सूर्य्यमहात्ये कलिवर्णनोनाम नवमोध्यायः ।

चौ०-बोली तबही उमा हरषाई । दया करौ कुछ कहो गुसाई । देहि सेवा करि नर सुखपावै । छाड़ि भजे शुभ गति नर पावै । रवि महिमा अति

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अगम अपारा । कहिये नाथ कथा बिस्तारा। जाको भक्ति मिलै सब घानी । सोप्रसंग सब कहहु बखानी ॥ अति उत्तम जस रवि अवगाहा । सो प्रभु बरनो सहित उछाहा ॥ कस स्वरूप किमि रूपहि करही । किमि शीतल किमि तेजहि धरहि ॥ कहि प्रति मासन उदै गोसांई । किमि व्रतकरिनर मोक्षहि जाई ॥ सोई सत्य सब कहो बिचारी । जेहि सुनि होइ ज्ञान अधिकारी ॥ अस कहि शिवपद बंदन कीन्ह । हरषि शंभु हरि सुमिरन कीन्ह ॥

दो०-धन्यधन्य गिरजा सुनहु पूछहू जगहितलाग।
रवि चरित्र पावनपरम, सुनहु चरित्र अनुराग ॥

चौ०-रविमंडल कर सुन विस्तारा । जेहि बिधि तन स्थूल अपारा ॥ द्वादस सहस योजन चहुंफेरा। रवि मंडल जानहु शुभ डेरा ॥ अति उत्तम जग तेज अपारा । गये समीप न होय उबारा ॥ दस सहस रवि नयन गनाये । अति बिशाल कहि देव गनाये ॥ उदै होत त्रिभुवन तम भागे । तासन

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हम निज नित बरमांगे ॥ पर ब्रह्म साक्षी नहिं जाने । सुमित हिय ध्यान उर आने ॥ उदय होत बिधि रूपहिं जानो ॥ मध्य विष्णु को रूप बखानो ॥ सन्ध्या रूप गति केरी । तनिकाल तब सुरतिटेरी ॥ यह अनुमान सदा पद बंदिये । निश्चै करिबिश्वास अनंदिये ॥ पावहिं गति तेनर बड़भागी । जाके-कमल चरन लौ लागी ॥

दो०—येहि बिधि तो जानेउ उमा, रबपूजा जेहिहेतु ।
सिद्ध तासु मन कामना, चारि पदारथ देत ॥

चौ०—और सुनहु प्रभुकी प्रभुताई । सूर्य कथा सब बेदन गाई ॥ द्वादस तन धरि बेद बखाने । द्वादस कथा उद्योत बिधाने । द्वादस मासके द्वादस नामा ॥ उदै करै रबि जग सुख धामा । माघमास मासन महँनीका कह श्रुति सब मासन कर टीका ॥ मकर उदय कहि बरुन सुनामा । सुमिरत ताहिं होइ मन कामा ॥ फागुन कुम्भ मकर शुभ नामा भक्ति ज्ञान ध्यान कर जामा ॥ चैत मान रबि

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदय कराहीं । नाम देव जग जाने ताहीं ॥ माघहिं मेष भानु तप होई । उच्च नाम रबि कहिहैं सोई ॥

दो०—इन्द्रनाम वृष ज्येष्ठ तप, सब प्रकार सुख देहिं।
रवि आषाढतपकर मिथुन, तासुनाम जपलेहिं ॥

चौ०-सावन करक नाम रबि केरी । भादों सिंह भवन का फेरी ॥ आश्विन कन्या राशि बिराजै । सुवरन रेत नाम सुभ छाजै ॥ कातिल तुला दिवाकर नामा । उदय करहिं रवि जग सुख धामा । मार्गशीर्ष वृश्चिकाहि सुहाई । मित्रनाम सब जग सुख पाइ ॥ पूसमास धनराशि गनाये । बिष्णु सनातन नाम कहाये । येहिबिधि द्वादस मासनामहीं । मास२ प्रति उदय कराहीं । औरों बेद कहैं अस बानी । मास २ प्रति उदय भवानी ॥

दो०-सुनोउमा यद सकलब्रत, दिनकर याहि बिधान।
याहि करै सुभगति मिलै, गावे बेद पुरान ॥

इति श्रीमहापुराण सूर्य्यमाहात्म्ये दशमोऽध्यायः ।

चौ०-मनस्थिर करै सुनु शैलकुमारी । ब्रत बिधान

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहौ बिस्तारी ॥ शनीवार लघु भोजन कीजे । अरु आदितकार धरम कीजै । दंतकाष्ट पहिले कर लीजै तब अस्नानहिं चितहिं दीजै । उदय होत रवि अंजुलीदेई । सात प्रदक्षिणा करिये सेई । तब धोती अरु मल उपरना । होमकरै पडिमंत्र सपरना ॥ बन्दि दंडवत रवि कहँ करई । दृढ़ बिश्वास चित मँ धरई । अगहनते यह ब्रतहिं बखानो । ताकर बिधिता करि सब आनौ ॥ अगहन में तुलसी दल खंडित । ब्रत करै सूक्ष्मते पंडित ॥ पूपमास गोघृत तलतीना । अति पुनीत काया कर दीना ॥

दो०-माघ मास ब्रत जो करै, मुष्टि तिन तिलखाय ।
ब्रत बिधान जो करहिं नर, ऋषिलोकहिते जाय॥

फागुन मास बरत सुखदाई । क्षीर तीन फल भोजनखाई ॥ चैतमास कर सुनहु बिधाना । दही तीन पल अधिकन आना ॥ बैसाख गोघृत गोबर आना । तीन पलते अधिक न आना ॥ जेष्टमास करमाबबि बादी । तीन अंजुली जल अभ्यादी ॥

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मास असाढ बरत कष्ट धरई । तीन मिरिच आलम्बन करई । सावन मास बरत रवि नीका । खांड तीन पहले सबहीका ॥ भादोंमास अमित सुखदाई त्रैअंजुल गोमूत्रहिं ख.ई ॥ अश्विन मास बरत शुभ जाने । फल कदलीके तीन बखाने ॥ कातिक मास बरत जो करई । त्रैफल हव्य आनिके चरई ॥

दो०-यहिबिधि बारहमासलागि,व्रतबिधान कैलीन ।
रविपूजा बिधिव्रत सहित, मुनि दुर्लभ सोदीन॥
तुमसम सुव्रत बिचारि नित,लत्यसो प्रगटे आई ।
अब जो कहिहौं उमा, सो बरनो हरषाई ॥

इति श्रीमहापुराणे सूर्य्यव्रतवर्णनो नाम ग्यारहमोध्यायः ।

सो सुनि उमा हर्ष अतिभई । माया मोह व्यथा सबगई ॥ धन्यर सुनु शंकर स्वामी । कथा कह्यो निज हरषित गामी ॥ जे कर्ता रवि पूजन लोगा । करहिं अनन्द मिटहिं सब रोगा । कथा और कछु कहे गुसांई । सो तुम अब करो सहाई ॥

इति श्रीमहापुराणे सूर्य्यमहात्म्ये उमामहेश्वर संवादे
सूर्य्यकथा वर्णनोनाम द्वादशोध्यायः ॥ १२ ॥

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सूचीपत्र ।

हरिश्चन्द्र नाटक	=)	कि० छबीली भठियारी	=)
प्रहलाद नाटक	-)	कि० चमेलीगुलाब	।)
मोरध्वज नाटक	≡)	कि० सचाप्यार	।=)
नारदमोह लीला नाटक	=)	कि० चम्पा चमेली	-)
फुलवारी लीला नाटक	=)	कि० शाहरूम	-)
किस्सा छैले मथनू	=)	अकबर बीरबल विनोद	।-)
कि० सारंगा सदाबृज	≡)	कि० सारंगा बड़ा	।=)
कि० तिलस्मी मछली	≡)	रातकी मुहब्बत	≡)
रातकी वारदात	=)	कि० तीन परी दो भाग	=
रातकी मुलाकात	=)	कि० हातमताई	॥)
दो दो बातें	=)	कि० चहारदरवेश	॥)
रात में वीसखून	=)	कि० सिंहासन बत्तीसी	।)
कि० वैताल पचीसी	=)	कि० गुलबकावली	।)
कि० सवा बहत्तरी	।)	कि० फसाना अजायब	-)

पुस्तक मिलने का पता—

पं० धर्म्मदत्त त्रिपाठी

साक्षीविनायक बनारस सिटी ।

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri